२८९५

अथ

# सन्तानगोपालस्तोत्रम्

( सन्तानोत्पत्तिविधानसहितम् )

प्रकाशक—
भार्गवपुस्तकालय, गायघाट, बनारस ।
ब्रांच–कचौड़ीगली, बनारस ।
मूल्य ।)

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ अथ ॥

# सन्तानगोपालस्तोत्रम्

## सन्तानोत्पत्तिविधानसहितम् मूल्य ।)

पता—भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस ।
ब्रांच—कचौड़ी गली, बनारस ।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

# भूमिका

अपौरुषेय वेदों से लेकर स्मृति पुराण काव्य इत्यादिक सभी ग्रन्थों ने पुत्र का महत्ता का वर्णन किया है। स्थानाभाव होने पर भी हम कुछ लोगों के मत को यहाँ पर प्रदर्शित कर देते हैं। इससे सबको विचारावकाश होना चाहिये। "सोऽस्यायमात्मा पुण्येभ्यः कर्मेभ्यः प्रतिधीयतेऽथास्यायमितर आत्मा कृतकृत्यो वयोगतः प्रैति स इतः प्रयन्नेव पुनर्जायते तदस्य तृतीयं जन्म"

( ऐतरेय उप० ४-४ )

अर्थात् इस संसार में यह पुत्ररूपी आत्मा पुण्यकर्म करने के लिये इसका प्रतिनिधि होकर रह जाता है यथा "आत्मा वै जायते पुत्रः" और वह कृतकृत्य होकर महाप्रयाण करता है। "पुत्रशब्देन चैतद्धि नरकात् त्रायते पिता" ( शंकर अध्यात्म० रा० २-३-५८ ) "अपुत्रस्य गतिर्नास्ति" ( स्मृति )

"नूनं प्रसूतिविकलेन मया प्रसिक्तं, धौताश्रुशेषमुदकं पितरः पिबन्ति"

( कालिदास )

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

आलक्ष्यदन्तमुकुलाननिमित्तहासैरव्यक्तवर्णरमणीयवचः प्रवृत्तीन् । अङ्काश्रयप्रणयिनस्तनयान् वहन्तो धन्यास्तदङ्गरजसा मलिनीभवन्ति ॥

( अभि० शाकु० ७-१७ )

यहाँ पर तो राजा दुष्यन्त पुत्र को गोद में लिये हुए व्यक्ति को जिसका कि अङ्ग धूलि-धूसरित पुत्र के कारण रज रञ्जित हो गया है उसीको धन्य मान रहे हैं। पुत्रानंद के सामने मुनियों के ब्रह्मानंद को भी तुच्छ माना। निस्संदेह पुत्ररत्न यह लौकिक तथा पारलौकिक उभय फल को प्राप्त कराने वाला है। वह पुत्र ही का पुत्रत्व था जिसने ६० हजार पितरों का तारण किया, वह पुत्र ही का पुत्रत्व था जिसने इक्कीस बार राजवंशों का संहार किया। श्रवणकुमार आज भी श्रवण-गामी हो रहे हैं।

ऐसी अवस्था में विचारणीय यह विषय है कि जिसको पुत्र प्राप्त नहीं है उसके लिये उसकी प्राप्ति के कौन से साधन हो सकते हैं। इस निमित्त आचार्यों ने कई मार्ग बतलाये हैं जिनमें हरिवंशश्रवण, भौमव्रत, रुद्राभिषेक, वंशगोपाल मंत्र जप, शतचण्डीविधान तथा संतानगोपालस्तोत्र इत्यादि प्रथा अधिक प्रचलित है। और इनके द्वारा लोग पुत्रसुख का अनुभव भी करते हैं।

यह संतानगोपाल मंत्रविधि उन्हीं संतानप्रद प्रथाओं में से एक सरल साधन

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

है। हमारे शारदा मंदिर में करीब ढाई सौ वर्ष की हस्तलिखित प्रति इसकी विधी से पूर्ण थी। वही प्राचीन प्रति समस्त जनता के उपकारार्थ मैं प्रकट कर देता हूँ। इसकी विधि के साथ ही साथ मैंने पुत्रप्रद नागेन्द्रयन्त्र भी दे दिया है जिसके भजन पूजन से रमणी शीघ्र ही पुत्रप्रसविनी हो 'जननी' पद की भागी हो जाती है।

विनीत—

मातृप्रसाद पाण्डेय

शंकर पाठशाला आही ( मिर्जापुर )

---

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र पता—

भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस।

ब्रांच—कचौड़ी गली, बनारस।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

❀ श्रीमते रामानुजाय नमः ❀

# अथ सन्तानगोपालस्तोत्रं प्रारभ्यते

श्रीशं कमलपत्राक्षं देवकीनन्दनं हरिम् ॥ सुतसम्प्राप्तये कृष्णं नमामि मधुसूदनम् ॥ १ ॥ नमाम्यहं वासुदेवं सुतसम्प्राप्तये हरिम् ॥ यशोदांकगतं बालं गोपालं नन्दनन्दनम् ॥ २ ॥ अस्माकं पुत्रलाभाय गोविन्दं मुनिवन्दितम् ॥ नमाम्यहं वासुदेवं देवकीनन्दनं सदा ॥ ३ ॥ गोपालं डिम्भकं वन्दे कमलापतिमच्युतम् ॥ पुत्रसम्प्राप्तये कृष्णं नमामि यदुपुङ्गवम् ॥४॥ पुत्रकामेष्टिफलदं कञ्जाक्षं कमला-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

पतिम् ॥ देवकीनन्दनं वन्दे सुतसम्प्राप्तये मम ॥ ५ ॥ पद्मायत पद्मनेत्र पद्मनाभ जनार्दन ॥ देहि मे तनयं श्रीश वासुदेव जगत्पते ॥६॥ यशोदांकगतं बालं गोविन्दं मुनिवन्दितम् ॥ अस्माकं पुत्रलाभाय नमामि श्रीशमच्युतम् ॥ ७ ॥ श्रीपते देवदेवेश दीनार्तिहरणाच्युत ॥ गोविन्द मे सुतं देहि नमामि त्वां जनार्दन ॥ ८ ॥ भक्तकामद गोविन्द भक्तरक्ष शुभप्रद ॥ देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ॥६॥ रुक्मिणीनाथ सर्वेश देहि मे तनयं सदा ॥ भक्तमन्दारपद्माक्ष त्वामहं शरणं गतः ॥ १० ॥ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ॥ देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥११॥ वासुदेव जगद्वन्द्य श्रीपते पुरुषोत्तम ॥ देहि मे तनयं

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ १२ ॥ कञ्जाक्ष कमलानाथ
परकारुणिकोत्तम ॥ देहि मे तनयं० ॥ १३ ॥ लक्ष्मीपते
पद्मनाभ मुकुन्द मुनिवन्दित ॥ देहि मे तनयं० ॥ १४ ॥
कार्यकारणरूपाय वासुदेवाय ते सदा ॥ नमामि पुत्रलाभार्थं
सुखदाय बुधाय ते ॥ १५ ॥ राजीवनेत्र श्रीराम रावणारे
हरे कवे ॥ तुभ्यं नमामि देवेश तनयं देहि मे हरे ॥ १६ ॥
अस्माकं पुत्रलाभाय भजामि त्वां जगत्पते ॥ देहि मे तनयं
कृष्ण वासुदेव रमापते ॥ १७ ॥ श्रीमानिनीमानदातगोपी-
वस्त्रापहारक ॥ देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव जगत्पते
॥ १८ ॥ अस्माकं पुत्रसम्प्राप्तिं कुरुष्व यदुनन्दन ॥ रमापते
वासुदेव मुकुन्द मुनिवन्दित ॥ १९ ॥ वासुदेव सुतं देहि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तनयं देहि माधव ॥ पुत्रं मे देहि श्रीकृष्ण वत्सं देहि महा-
प्रभो ॥२०॥ डिम्भकं देहि श्रीकृष्ण आत्मजं देहि राघव ॥
भक्त मन्दार मे देहि तनयं नन्दनन्दन ॥२१॥ नन्दनं देहि
मे कृष्ण वासुदेव जगत्पते ॥ कमलानाथ गोविन्द मुकुन्द मुनि-
वन्दित ॥२२॥ अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ॥
सुतं देहि श्रियं देहि श्रियं पुत्रं प्रदेहि मे ॥ २३ ॥ यशोदा-
स्तन्यपानज्ञं पिबन्तं यदुनन्दनम् ॥ वन्देऽहं पुत्रलाभार्थं कपि-
लाख्यं हरिं सदा ॥ २४ ॥ नन्दनन्दन देवेश नन्दनं देहि
मे प्रभो ॥ रमापते वासुदेव श्रियं पुत्रं जगत्पते ॥२५॥ पुत्रं
श्रियं श्रियं पुत्रं कृष्ण मे देहि माधव ॥ अस्माकं दीनवाक्यस्य
अवधारय श्रीपते ॥ २६ ॥ गोपाल डिम्भ गोविन्द वासुदेव

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

रमापते ॥ अस्माकं डिम्भकं देहि श्रियं देहि जगत्पते
॥ २७ ॥ मद्वाञ्छितं फलं देहि देवकीनन्दनाच्युत ॥ मम
पुत्रार्थितं धन्य कुरुष्व यदुनन्दन ॥२८॥ याचेऽहं त्वां श्रियं
पुत्रं देहि मे पुत्रसम्पदम् ॥ भक्तचिन्तामणे राम कल्पवृक्ष
महाप्रभो ॥ २९ ॥ आत्मजं नन्दनं पुत्रं कुमारं डिम्भकं
सुतम् ॥ अर्भकं तनयं देहि सदा मे रघुनन्दन ॥ ३० ॥
वन्दे सन्तानगोपालं माधवं भक्तकामदम् ॥ अस्माकं पुत्रस-
म्प्राप्त्य सदा गोविन्दमच्युतम् ॥३१॥ अकारयुक्तं गोपाल
श्रीयुक्तं यदुनन्दनम् ॥ क्लींयुक्तं देवकीपुत्रं नमामि यदुना
यकम् ॥ ३२ ॥ वासुदेव मुकुन्देश गोविन्द माधवाच्युत ॥
देहि मे तनयं कृष्ण रमानाथ महाप्रभो ॥ ३३ ॥ राजीव-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नेत्र गोविन्द कपिलाक्ष हरे प्रभो ॥ समस्तकाम्यवरद देहि मे तनयं सदा ॥३४॥ अब्जपद्मनिभः पद्मवृन्दरूप जगत्पते ॥ देहि मे वरसत्पुत्रं रमानायक माधव ॥ ३५ ॥ नन्दपाल धरापाल गोविन्द यदुनन्दन ॥ देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ॥३६॥ दासमन्दार गोविन्द मुकुन्द माधवाच्युत ॥ गोपाल पुण्डरीकाक्ष देहि मे तनयं श्रियम् ॥ ३७ ॥ यदुनायक पद्मेश नंदगोपवधूसुत ॥ देहि मे तनयं कृष्ण श्रीधर प्राणनायक ॥ ३८ ॥ अस्माकं वाञ्छितं देहि पुत्रं देहि रमापते ॥ भगवन् कृष्ण सर्वेश वासुदेव जगत्पते ॥ ३९ ॥ रामाहृदयसम्भार सत्यभामामनःप्रिय ॥ देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ॥ ४० ॥ चंद्रसूर्याक्ष

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

गोविन्द पुण्डरीकाक्ष माधव ॥ अस्माकं भाग्यसत्पुत्रं देहि देव जगत्पते ॥ ४१ ॥ कारुण्यरूप पद्माक्ष पद्मनाभ समर्चित ॥ देहि मे तनयं कृष्ण देवकीनन्दनन्दन ॥ ४२ ॥ देवकीसुत श्रीनाथ वासुदेव जगत्पते ॥ समस्तकामफलद देहि मे तनयं सदा ॥ ४३ ॥ भक्तमन्दार गम्भीर शंकराच्युत माधव ॥ देहि मे तनयं गोपबालवत्सक श्रीपते ॥ ४४ ॥ श्रीपते वासुदेवेश देवकीप्रियनन्दन ॥ भक्तमन्दार मे देहि तनयं जगतां प्रभो ॥ ४५ ॥ जगन्नाथ रमानाथ भूमिनाथ दयानिधे ॥ वासुदेवेश सर्वेश देहि मे तनयं प्रभो ॥ ४६ ॥ श्रीनाथ कमलानाथ वासुदेव जगत्पते ॥ देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ ४७ ॥ दासमन्दार गोवि-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

न्द भक्तचिन्तामणो प्रभो ॥ देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ ४८ ॥ गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रमानाथ महाप्रभो ॥ देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ ४९ ॥ श्रीनाथ कमलानाथ गोविन्द मधुसूदन ॥ मत्पुत्रफलसिद्ध्यर्थं भजामि त्वां जनार्दन ॥ ५० ॥ स्तन्यं पिबन्तं जननीमुखाम्बुजं विलोक्य मन्दस्मितमुज्ज्वलाङ्गम् ॥ स्पृशन्तमन्यस्तनमङ्गुलीभिर्वन्दे यशोदांकगतं मुकुन्दम् ॥ ५१ ॥ याचेऽहं पुत्रसन्तानं भवन्तं पद्मलोचन ॥ देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ ५२ ॥ अस्माकं पुत्रसम्पत्त्यैश्चिन्तयामि जगत्पते ॥ शीघ्रं मे देहि दातव्यं भवता मुनिवन्दित ॥ ५३ ॥ वासुदेव जगन्नाथ श्रीपते पुरुषोत्तम ॥ कुरु

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मां पुत्रदत्तं च कृष्ण देवेन्द्रपूजित ॥ ५४ ॥ कुरु मां पुत्रदत्तं
च यशोदाप्रियनन्दन ॥ मह्यंवै पुत्रसन्तानं दातव्यं भवता हरे
॥ ५५ ॥ वासुदेव जगन्नाथ गोविन्द देवकीसुत ॥ देहि मे
तनयं राम कौसल्याप्रियनन्दन ॥ ५६ ॥ पद्मपत्राक्ष गो-
विन्द विष्णो वामन माधव ॥ देहि मे तनयं सीताप्राणना-
यक राघव ॥ ५७ ॥ कञ्जाक्ष कृष्ण देवेन्द्र ईड्य वै मुनि-
वन्दित ॥ लक्ष्मणाग्रज श्रीराम देहि मे तनयं सदा ॥ ५८ ॥
देहि मे तनयं राम दशरथप्रियनन्दन ॥ सीतानायक कञ्जाक्ष
मुचुकुन्दवरप्रद ॥ ५९ ॥ विभीषणस्य या लंका भवता
दीयते पुरा ॥ अस्माकं तत्प्रकारेण तनयं देहि माधव
॥ ६० ॥ भवदीयपदाम्भोज चिन्तयामि निरन्तरम् ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

देहि मे तनयं सीताप्राणवल्लभ राघव ॥ ६१ ॥ राम
मत्काम्यवरद पुत्रोत्पत्तिफलप्रद ॥ देहि मे तनयं श्रीश
कमलासनवन्दित ॥ ६२ ॥ राम राघव सीतेश लक्ष्मणा-
नुज देहि मे ॥ भाग्यवत्पुत्रसन्तानं दशरथात्मज श्रीपते ॥६३॥
देवकीगर्भसञ्जात यशोदाप्रियनन्दन ॥ देहि मे तनयं राम
कृष्ण गोपाल माधव ॥ ६४ ॥ कृष्ण माधव गोविन्द
वामनाच्युत शंकर ॥ देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक
॥ ६५ ॥ गोपबाल महाधन्य गोविन्दाच्युत माधव ॥ देहि
मे तनयं कृष्ण वासुदेव जगत्पते ॥ ६६ ॥ दिशतु दिशतु
पुत्रं देवकीनन्दनोऽयं दिशतु दिशतु श्रीशो भावयेत्पुत्रला-
भम् ॥ दिशतु दिशतु श्रीशो राघवो रामभद्रो दिशतु दिशतु

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

३७४०

पुत्रं वंशविस्तारहेतोः ॥ ६७ ॥ दीयतां वासुदेवेश तनयं मत्प्रियं सुतम् ॥ कुमारं नन्दनं सीतानायकेश सदा मम ॥ ६८ ॥ राम राघव गोविन्द देवकीसुत माधव ॥ देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥ ६९ ॥ वंशविस्तारकं पुत्रं देहि मे मधुसूदन ॥ सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥७०॥ ममाभीष्टसुतं देहि कंसारे माधवाच्युत ॥ सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥ ७१ ॥ चन्द्रार्ककल्पपर्यन्तं तनयं देहि माधव ॥ सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥ ७२ ॥ विद्यावन्तं बुद्धिमन्तं श्रीमन्तं तनयं सदा ॥ देहि मे तनयं कृष्ण देवकीनन्दनः सदा ॥ ७३ ॥ नमामि त्वां पद्मनेत्रं सुतलाभाय कामदम् ॥ मुकुन्द पुण्डरीकाक्ष गोविन्द

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मधुसूदन ॥७४॥ भगवन् कृष्ण गोविन्द सर्वकामफलप्रद ॥
देहि मे तनयं स्वामिंस्त्वामहं शरणं गतः ॥ ७५ ॥ स्वामिं-
स्त्वं भगवन् राम कृष्ण माधव कामद ॥ देहि मे तनयं
नित्यं त्वामहं शरणं गतः ॥ ७६ ॥ तनयं देहि गोविन्द
कञ्जाक्ष कमलापते ॥ सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं
गतः ॥ ७७ ॥ पद्मापते पद्मनेत्र प्रद्युम्नजनक प्रभो ॥
सुतं देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥ ७८ ॥ शङ्खचक्र-
गदाखड्गशार्ङ्गपाणे रमापते ॥ देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं
शरणं गतः ॥ ७९ ॥ नारायण रमानाथ राजीवपत्रलोचन ॥
सुतं मे देहि देवेश पद्मसद्मानुवन्दित ॥ ८० ॥ राम राघव
गोविन्द देवकीवरनन्दन ॥ रुक्मिणीनाथ सर्वेश नारदादि-

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सुरार्चित ॥ ८१ ॥ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते ॥
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालक त्रायक ॥ ८२ ॥ मुनि-
वन्दित गोविन्द रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ॥ देहि मे तनयं० ॥ ८३ ॥
गोपिकार्जितपंकजे मकरन्दाक्तमानस ॥ देहि मे तन०
॥ ८४ ॥ रमाहृदयपद्मलोल श्रीश माधव कामद ॥ ममा-
भीष्टसुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥ ८५ ॥ वासुदेव रमानाथ
दासानां मङ्गलप्रद ॥ देहि मे तनयं० ॥ ८६ ॥ कल्याणप्रद
गोविन्द मुरारे मुनिवन्दित ॥ देहि मे तन० ॥ ८७ ॥ पुत्रप्रद
मुकुन्द श रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ॥ देहि मे० ॥ ८८ ॥ पुण्ड-
रीकाक्ष गोविन्द वासुदेव जगत्पते ॥ देहि मे तन० ॥ ८९ ॥
दयानिधे वासुदेव मुकुन्द मुनिवन्दित ॥ देहि मे तन० ॥ ९० ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

पुत्रसम्पत्प्रदातारं गोविन्दं देवपूजितम् ॥ वन्दामहे सदा कृष्णं
पुत्रलाभप्रदायिनम् ॥ ६१ ॥ कारुण्यनिधये गोपीवल्लभाय
मुरारये ॥ वन्दामि पुत्रलाभार्थं देहि मे तनयं विभो ॥६२॥
नमस्तस्मै रमेशाय रुक्मिणीवल्लभाय ते ॥ देहि मे तनयं
श्रीश गोपबालकनायक ॥ ६३ ॥ नमस्ते वासुदेवाय नित्यं
श्रीकामुकाय च ॥ पुत्रदाय च शेषेन्द्रशायिने रङ्गशायिने
॥ ६४ ॥ शेषशायिन् रमानाथ मङ्गलप्रद माधव ॥ देहि मे
तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥६५॥ दासस्य मे सुतं देहि
दीनमन्दार राघव ॥ सुतं देहि सुतं देहि पुत्रं देहि रमापते
॥६६॥ यशोदातनयाभीष्टपुत्रदानरतः सदा ॥ देहि मे तनयं०
॥ ६७ ॥ मदिष्ट देव गोविन्द वासुदेव जनार्दन ॥ देहि मे

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तनयं० ॥९८॥ नीतिमान्धनवान्पुत्री विद्यावांश्च प्रजायते ॥
भगवंस्त्वत्कृपायाश्च वासुदेवेन्द्रपूजित ॥ ९९ ॥ यः पठेत्पुत्र-
शतकं सोऽपि सत्पुत्रवान्भवेत् ॥ श्रीवासुदेवकथितं स्तोत्र-
रत्नं सुखाय च ॥ १००॥ जपकाले पठेन्नित्यं पुत्रलाभं धन-
श्रियम् ॥ ऐश्वर्यं राजसम्मानं सद्यो याति न संशयः ॥१०१॥

इति लक्ष्मीकेशवसंवादे सन्तानगोपालस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

---

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का एकमात्र पता—

भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस ।

ब्रांच-कचौड़ी गली, बनारस ।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

* श्री *

# सन्तानगोपालादर्शः

## ( सन्तानोत्पत्तिविधानम् )

नत्वा श्रीकृष्णचरणौ श्रीशम्भुपदपङ्कजौ ।
वन्दे वाणीं गणेशं च भास्करं सततं मुदा ॥ १ ॥
आनन्दी जननी पदाब्जयुगलं नत्वा च ध्यात्वा पुनः
श्रीमच्छत्रधरस्य पादयुगलं ध्यात्वा मुहुः सादरम् ।
पुत्रोत्पत्तिहिताय सर्वजगतां संतानगोपालक—
मादर्शं तु सयन्त्रकं वितनुते नागेन्द्रयन्त्रान्वितम् ॥ २ ॥

पुत्रेच्छुः यजमानः सपत्नीकः स्नानं कृत्वा नवीनवस्त्रं परिधाय सन्ध्योपासनादि नित्यकर्म विधाय करिष्यमाणजपस्थाने पूर्वाभिमुखोपविश्य स्वदक्षिणे पत्नीं चोपवेशयेत् । मार्जनं पवित्रधारणं कृत्वाऽऽचम्य प्राणानायम्य विष्णुस्मरणं कृत्वा घृतदीपं प्रज्वाल्य पात्रोपरि स्थापयेत् । ततः—

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं मम धर्मपत्न्यां चिरञ्जीवशुभ-सन्तानप्राप्त्यर्थं श्रीवंशगोपालवासुदेवप्रीतये सन्तानगोपालमन्त्रलक्षसंख्यापरिमितं जपं ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये। एतत्कार्यपरिपूरणार्थं कलशोपरि श्रीवासुदेवस्थापनं पूजनं च करिष्ये। तन्निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं वरुणकलशस्थापनं च करिष्ये।

आचार्यवरणम्। देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकशर्माहमाचार्यत्वेन त्वामहं वृणे। आचार्यः वृतोऽस्मि करिष्यामीति प्रतिवचनम्।

आचार्य को वस्त्र अलंकार से पूजे और ऋत्विज (जपकर्ता) को भी वस्त्रा-लंकरादि से पूजे।

## जपविधिः

जपकर्ता स्नान कर नित्यकर्म से निवृत्त हो आचमन कर प्राणायाम करके—देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रस्य अमुकशर्मणो यजमानस्य धर्मपत्न्यां चिरञ्जीव-शुभसन्तानप्राप्त्यर्थं लक्षादिसंख्यान्तर्गतयथोक्तसंख्यां प्रारभ्यैतत् संख्यापर्यन्तं संतान-गोपालमंत्रस्य जपमहं करिष्यामि।

इस प्रकार संकल्प कर त्रिकोण लिख कर उसकी पूजाकर आसन बिछाकर उसपर पूर्वाभिमुख वा उत्तराभिमुख बैठ भूशुद्धि-भूतशुद्धि प्राणप्रतिष्ठा-अन्तर्मातृका-बहिर्मातृका न्यास करके पञ्चाङ्ग वा षडङ्ग करके जप करे।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

प्रतिदिन स्थापित मूर्ति की पूजा आर्ति यजमान वा जपकर्ता जबतक विसर्जन न हो तबतक बराबर करे।

पुत्रप्रदकृष्णमन्त्राः ( गौतमोये मन्त्रचन्द्रिकायां च )—अथ सन्तानसंसिद्धौ प्रजपेन्मासमात्रकम्। यस्य विज्ञानमात्रेण मन्त्राः सिद्ध्यन्ति मन्त्रिणः ॥

जिस मंत्र के विज्ञानमात्र से साधकों के मंत्र सिद्ध होते हैं, उस मंत्र को पुत्र की अभिलाषा पूर्ण करने के लिये एक मास जपे।

( १ )

ॐ अस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः श्रीकृष्णो देवता। ग्लौं बीजम्। नमः शक्तिः। पुत्रार्थे जपे विनियोगः। पादेन समस्तेन च पञ्चाङ्गानि-देवकीसुत गोविन्द हृदयाय नमः। वासुदेव जगत्पते शिरसे स्वाहा। देहि मे तनयं कृष्ण शिखायै वषट्। त्वामहं शरणं गतः कवचाय हुम्। ॐ नमः अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम् —

विजयेन युतो रथस्थितः प्रसमानीय समुद्रमध्यतः। प्रददत् तनयान् द्विजन्मने स्मरणीयो वसुदेवनन्दनः ॥ १ ॥

मन्त्रः ३२

देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ लक्षं जपः मधुराक्ततिलैर्दशांशहोमः।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

( २ ) मन्त्रान्तरम्—

ॐ अस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीकृष्णो देवता। ग्लौं बीजम्। नमः शक्तिः। पुत्रार्थे जपे विनियोगः। ततः पञ्चाङ्गानि यथा ॐश्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं देवकीसुत गोविन्द हृदयाय नमः। वासुदेव जगत्पते शिरसे स्वाहा। देहि मे तनयं कृष्ण शिखायै वषट्। त्वामहं शरणं गतः कवचाय हुम्। ॐ नमः अस्त्राय फट्।

अथ ध्यानम्—

वैकुण्ठादागतं कृष्णं रथस्थं करुणानिधिम्। किरीटिसारथिं पुत्रानानयन्तं परात्परम्।१।
आदाय ताञ्जलस्थाञ्च गुरवे वैदिकाय च। अर्पयन्तं महाभागं ध्यायेत् पुत्रार्थमच्युतम्।२।

मन्त्रः ३७

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।

( ३ ) पुनर्मन्त्रान्तरम् *

ॐ अस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य दुर्वासा ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः।

---

* ॐ क्लीं देवकीसुत गो० इस मंत्र का निम्नलिखित विनियोगादि है इसका

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्रीकृष्णो देवता। पुत्रार्थे जपे विनियोगः। दीर्घयुक्तकामबीजेन षडङ्गः।

ॐ क्लाँ इति हृदि। ॐ क्लीं इति शिरसि। ॐ क्लूँ शिखायै। ॐ क्लैं कवचम्। ॐ क्लौं नेत्रम्। ॐ क्लः अस्त्रम्।

ॐ क्लाँ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्लीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्लूँ मध्यमाभ्यां नमः। ॐ क्लैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ क्लौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ क्लः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ॐ भूर्भुवः स्वरोमिति दिग्बन्धनं कुर्य्यात्।

अथ ध्यानम्—

बर्हापीडाभिरामं मृगमदतिलकं कुण्डलभ्रान्तगण्डं कञ्जाक्षं कम्बुकण्ठं स्मित सुभगमुखं स्वाधरे न्यस्तवेणुम्। श्यामं खण्डं त्रिभङ्गं रविकरवसनं भूषितं वैजयन्त्या वन्दे वृन्दावनस्थं युवातशतवृतं बह्मगोपालवेषम्॥ १॥

मन्त्रः ३४ अर्णः

ॐ क्लीं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं

---

षडङ्ग दीर्घयुत कामबोज से लेकर दिग्बन्धन करने के बाद मूल मंत्र से भी न्यास करना किसी आचार्य का मत है और उनके मत से यह ध्यान है—शङ्खचक्रधरं देवं श्यामवर्णं चतुर्भुजम्। सर्वाभरणसंदीप्तं पीतवासः समन्वितम्॥ १॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

शरणं गतः ॥ अयमेव मन्त्रः प्रणवरहितः त्रिशदर्णः गौतमीये-अनेन मन्त्रितं त्वाज्यं पुत्रसिद्धिकरं परम् ! अनेन जलपानेन वन्ध्या वर्षाल्लभेत् प्रजाम् ॥

अन्यत्सर्वं पूर्ववत्—

(४) मन्त्रान्तरं च

ॐ अस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः। गायत्री छन्दः। कृष्णो देवता। क्लीं बीजम्। नमः शक्तिः। पुत्रार्थे जपे विनियोगः॥

क्लां क्लीं इत्यादि षडङ्गः यथा—

क्लां हृदयाय नमः। क्लीं शिरसे स्वाहा। क्लूं शिखायै वषट्। क्लैं कवचाय

---

मयूरपिच्छसंयुक्तं विष्णुतेजोपबृंहितम्। समर्पयन्तं विप्राय नष्टानानय बालकान् ॥२॥
करुणामृतसम्पूर्णां चेष्टैकनिलयं त्वजम्॥

स्त्रीभिस्तु—

स्वान्ते सम्मुखसन्निविष्टममले रक्ताम्बुजे बालकम्,
माणिक्योज्ज्वलबालभूषणगणं संतप्तहेमद्युतिम्।
प्रेम्णाऽऽलिङ्ग्यमुहुर्मुहुः सुखवशात्संल्लालितं स्वात्मना,
पुत्रत्वेन विभावयेन्मुररिपुं पुत्रार्थिनी कामिनी ॥ १ ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

हुम् । क्लौं नेत्रत्रयाथ वौषट् । क्लः अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम्—

शंखं चक्रं गदां पद्मं दधानं सूतिकागृहे । अङ्के शयानं देवक्याः कृष्णं वन्दे विमुक्तये ॥

मन्त्रः १५ अर्णः

ॐ नमो * भगवते जगत्प्रसूतये नमः । लक्षत्रयजपः अन्यत् सर्वं प्राग्वत् ।

(५) मन्त्रः ३४ अर्णः

क्लीं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते । देहि मे तनतं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः क्लीं ।

अन्यत पूर्ववत्

(६) मन्त्रान्तरम्

ॐ अस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः । दैवी गायत्री छन्दः । सन्तानगोपालो देवता । गं बीजम् । स्वाहा शक्तिः । क्लीं कीलकम् । अमुक्याः सन्तानार्थजपे विनियोगः । गां क्लीं हृत इत्यादि षडङ्गः ।

अथ ध्यानम्—

अङ्गनामङ्गनामन्तरे माधवं माधवं माधवं चान्तरेणाङ्गना । इत्थमाकल्पिते मण्डले मध्यगः संजगौ वेणुना देवकीनन्दनः ॥

---

* ॐ नमो भगवते जगदात्मसूतये नमः, केचिदनेन प्रकारेण पठन्ति ।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मन्त्र २६ अर्णः

ॐ क्लीं गं षोडशसहस्रगोपस्त्रीविहारदक्ष सन्तानं कुरु-कुरु स्वाहा ।

अन्यत् पूर्ववत् ।

अथ सनत्कुमारोक्तसन्तानगोपालमन्त्रः—

( ७ )

ॐ अस्य श्रीसन्तानगोपालमन्त्रस्य नारद ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । श्रीकृष्णो देवता । पुत्रार्थे जपे विनियोगः । ग्लौं हृ० क्लीं शिरसे ।

अथवा—देवकीसुत गोविन्द हृदयाय० । वासुदेव जगत्पते शिरसे० । देहि मे तनयं कृष्ण शिखायै० । त्वामहं शरणं गतः कवचाय हुम् । समस्तपदैः अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम्—

शङ्खं चक्रं गदां पद्मं धारयन्तं जनार्दनम् । अङ्के शयानं देवक्याः सूतिका-मन्दिरे शुभे ।। एवं रूपं सदा कृष्णं सुतार्थं भावयेत् सुधीः ।

मन्त्रः ३३ अर्णः

ॐ देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते । देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ।। लक्षत्रयं जपेत् ।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

## पूजाविधि—

वैष्णविपीठे समावाह्य समर्चयेत्। अंगैः प्रथमावृत्तिः इन्द्रादिभिः द्वितीया, वज्रादिभिः तृतीया।

दशम्यपररात्रे तु शुक्लपक्षेऽर्चयेद्धरिम्। पूजार्थं स्वस्तिकः न्यस्य शरावं घृतसंयुतम्॥ कर्पूरवर्तिं संन्यस्य ज्वालयेद् दीपमुत्तमम्। पद्ममष्टदलं कृत्वा तत्रस्थं कृष्णमर्चयेत्॥ *सर्वोपचारसंयुक्तं सम्पूर्य कलशद्वयम्। तत्रावाह्याच्युतं भक्त्या प्रोक्तवत् पूजयेत् पुनः॥ सम्पूज्य कलशं द्वन्द्वमष्टोत्तारसहस्रकम्। अष्टोत्तारशतं वापि जपेन्मन्त्रमनन्यधीः॥ द्वादश्यामथ गोविन्दं सम्पूज्य विधिपूर्वकम्। शाल्यन्नं पायसं स्वादु गोसर्पिगुडमिश्रितम्॥ पक्वान्नं फलवत्सर्वं ससूपं च सतण्डुलम्। स्वादूपदंशं सुस्निग्धं कपिलादधिखण्डवत्॥ निवेदयेत्स्वर्णपात्रे पात्रभूताय विष्णवे। सुशीतलैश्च कर्पूरैः पाटलैः सुरभीकृतम्॥ वस्त्रपूतं स्वच्छतरं पानीयं च निवेदयेत्। स्ववित्ताशक्त्या गोविन्दं बुद्ध्या सम्पूज्य शुद्धया। द्विजेभ्यो भोजनं दद्यात् सर्वकामसमृद्धये॥ संस्कृते चानले विष्णुमावाह्यार्घ्यादिभिर्यजेत्। हविरष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिरेव वा। हुत्वा शेषं क्वचिद्द्रव्यं घृतेनाष्टशतं हुनेत्॥ सम्पात्य कलशद्वन्द्वे निषिच्येमौ च दम्पती। अभिषिच्य पुनस्ताभ्यां ध्यायंस्तोयमयं हरिम्॥ अष्टोत्तरशतं जप्त्वा हविः

* परिवारिवृक्षकषायेण।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

शेषं प्रदापयेत् । कृष्णं ध्यात्वा तु तत् पत्नी तमादाय सुखाशने ॥ आसाना प्राङ्मुखो भूत्वा कृष्णं एव प्रभक्षयेत् । सुभुक्तान् ब्राह्मणवरांस्ताम्बूलैर्मोदकादिभिः ॥ प्रतर्प्याथ नमस्कृत्य विष्णुं ध्यात्वाथ तद्द्विजान् । ततस्ताभ्यामिष्टसिद्धिर्युवयोरस्त्विति द्विजाः ॥ ब्रूयुस्तौ च सुसन्तुष्टौ : फलितं नोऽभिवाञ्छितम् । इति स्मरन्तावनतौ भुञ्जीयास्तामनन्तरम् ॥ एवं यः कुरुते विप्रो वित्तशाठ्यविवर्जितः । विष्णुभक्त्या विशिष्टोऽयं द्वादश्यां सितपक्षके ॥ सोऽचिराल्लभते पुत्रमायुष्मन्तं सुवर्चसम् । सन्ततेश्चापि कर्तारं विष्णुभक्तं महामतिम् ॥ दरिद्रः कर्तुमेवं यो न शक्नोति द्विजोत्तमः । जपेद्वा तर्पयेद् वापि सोऽपि पुत्रमवाप्नुयात् ।

शुक्लपक्ष में दशमी तिथि के बाद होते हुए भिनसहरा एकादशी के आरम्भ में विष्णु भगवान् की पूजा करे । पूजा के निमित्त कल्याणप्रद वस्तुओं को स्थापित पात्र में घृत धरे, कपूर की बत्ती का उत्तम दीप प्रज्वलित करे, अष्टदल कमल बनाकर उस पर हरि को स्थापित कर पूजा करे, दो कलश अनेक उपचार वस्तु से अथवा परिवारि वृक्ष के कषाय से पूर्ण करे उस पर नारायण की पूजा फिर भक्ति से करे और दोनों कलशों की पूजा करके स्थिर चित्त कर अष्टोत्तर सहस्त्र ( १००८ ) वा अष्टोत्तर शत ( १०८ ) बार मंत्र को जपे । बाद द्वादशी के दिन विधिपूर्वक गोविन्द को पूजा करके शाल्यन्न-पायस-स्वादिष्ट गुड़ से मिला गोघृत दाल भात के सहित

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

फल के सदृश सब पक्वान्न स्वादिष्ट चिकना दधि खण्ड के समान, सुवर्ण के पात्र में धर पात्रभूप श्रीविष्णुजी को निवेदन करे, ठंढ कपूर पाटल से मनोज्ञ वस्त्र से छाना हुआ स्वच्छ जल निवेदन करे। ब्राह्मणों को विष्णु तुल्य बुद्धि से जान अपने धन के शक्ति के अनुसार श्रद्धा से समस्त कार्य की वृद्धि के निमित्त भोजन करावे। संस्कारित अग्नि में विष्णु का आवाहन कर अर्घादि से पूजन करे १०८ आहुति वा १० आहुति घृत की देय, शेष कुछ रख लेय, फिर १०८ घृत की आहुति देय, दोनों कलश के जल से स्त्री के सहित यजमान को स्नान करावै फिर अभिशेक करे फिर वह सपत्नीक जलमय नारायण का ध्यान करे। १०८ अष्टोत्तरशत जप करे, हवि का जो शेष धरा है उसको यजमान की स्त्री को देय, वह उस हवि को लेकर सुखासन पर पूर्वमुख बैठ कृष्ण भगवान् का ध्यान कर हवि को खा जाय। आनन्द से ब्राह्मणों के भोजन करने के बाद लड्डू और पान दोनों से पुनः तृप्त कर नमस्कार करके विष्णु भगवान् को और ब्राह्मणों को नमस्कार करे। ब्राह्मण कहे कि कृष्णजी और ब्राह्मणां से तुम दोनों की इष्टसिद्धि होगी। वह स्त्री पुरुष अच्छे प्रकार से सन्तुष्ट हो हमलोगों का वाञ्छित फलित हुआ ऐसा स्मरण करते हुए इसके अनन्तर भोजन करे, इस प्रकार जो ब्राह्मण वित्त की शठता छोड़कर करेगा भगवान् की भक्ति से शुक्लपक्ष की द्वादशी तिथि को उसके शीघ्र दीर्घायु सुन्दर पुत्र का लाभ होगा, वह सन्तान वंशकर्ता विष्णुभक्त महा बुद्धिमान् होगा, जो दरिद्र ब्राह्मण इस

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

विधि को नहीं कर सकता है वह जप करे वा तर्पण करे वह पुत्र को पावेगा अर्थात् उसको पुत्र होगा। इति हविर्भक्षणप्रकारः।

(८) अथ भृगुसंहितोक्तसन्तानगोपालमन्त्रः ८४ अर्णः—

औं ऐं ह्रीं क्लीं श्रां वं वासुदेवाय सकलजन्मान्तरार्जितपापविध्वंसनाय श्रीमते देवकीसूनवे गोविन्दाय ते नमः पुत्रं जीव योगसम्पन्नं देहि देहि मध्ये मा खण्डितं कुरु कुरु प्रतिपक्षात् सौख्यं वितर वितर वं श्रां क्लीं ह्रीं ऐं श्रोम्।

विधि—चाँदी के ६ अंगुल लम्बे चौड़े पत्र पर अष्टगन्ध से अनार की लेखनी से पुरुष का रूप बनावे उसे मुख हृदय बाहु नाभि इन पाँच स्थान में प्रणव लिखे सुवर्ण वा रजत अथवा ताम्र के फल विना टूटे हुए चावल से पूर्णकर उसे वेदी पर धरे। कलस के ऊपर शुक्ल वस्त्र १२ हाथ का धर उसके ऊपर पान का पत्ता धर उसपर मूर्ति धर आवाहन प्राणप्रतिष्ठा कर षोडशोपचार से पूजा करे इनके पूजा के पहले दीप प्रज्वलित कर पवित्र धारण कर आचमन प्राणायाम विष्णु का स्मरण कर स्वस्तिवाचनादि के सकल कार्यकर गणेशादि की पूजा करे। फिर जप करनेवाले का वस्त्रोपवस्त्र पात्रोपपात्र द्रव्य मुद्रिको आचमनी आसन मालादि से वरण करे।

यन्त्रोद्धारः—

कामं मध्ये स्वरयुगलसत् केशरेऽप्यष्टपत्रेष्वालिख्यैवं जलनिधिमितान् यन्त्रवर्णान् क्रमेण।
भूयो हलभिः परिवृतमिदं भूपुरस्थं तदेतद्यन्त्रं सद्यो वितरति नृणां पुत्रपौत्रादिवृद्धिम्॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

पहले कमल बनावे, उसकी कर्णिका में कामबीज ( क्लीं ) लिखे उसके बाद पुत्र के अभिलाषा वाले का नाम स्त्री के सहित लिखे, फिर अष्टपत्र केशर में अकारादि जो १६ स्वर हैं उनमें से दो दो को लिखे, फिर दल के मध्य में वंशगोपाल का मन्त्र चार-चार अक्षर लिखे फिर उसके बाहर वृत्त बनाकर उसमें ककारादि हल् वर्ण लिख के वेष्टित करे फिर भूपुर बनावे। यह यन्त्र मक्खन पर लिखे वा सूक्ष्म सुवर्ण के पत्र पर लिखे अनार की कलम से अष्टगन्ध से लिखना समुचित होगा फिर इस यन्त्र को स्त्री खा जाय तो पुत्र होय।

वन्ध्यानां पुत्रोत्पादनार्थं सन्तानमोपालविधानम्—

प्रायः पापं विजानीयाच्चित्तं तस्य विशाधनम्। कृत्वा शुद्धिं तु देहस्य ततः कर्माणि कारयेत् ॥

पहले शरीर की शुद्धि के निमित्त जन्मान्तरीय सन्ततिप्रतिबन्धकारक दुरदृष्टजनितदोषपरिहारार्थ कर्माधिकार की सिद्धि के निमित्त यथाशक्ति प्रायश्चित्त को करे। प्रायश्चित्त पाप जानता है उसका शोधन करके देह शुद्ध होने पर कर्म को करे।

महार्णवे—

त्रिंशद्भिश्च तथा गोभिरर्धं तु मुनिभिः स्मृतम्। वन्ध्यात्वस्य निरासार्थं

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

धेनुं दद्याच्च हेमजाम् ॥ तथा यज्ञोपवीतं तु दद्याद्धेममयं शुभम् । षोडशानि च शूर्पाणि फलयुक्तानि दापयेत् ॥ एवं कृत्वा विधानेन वन्ध्यत्वात् प्रतिमुच्यते । सत्पुत्रं लभते नूनमेतत् कर्म प्रयोजयेत् ॥

महार्णव के ग्रन्थ में तोस के आधे १५ गोदान का अर्ध प्रायश्चित कहा है।

वन्ध्यापन को छोड़ाने के निमित्त स्वर्णगोदान करे, और हेममय (सुवर्ण का) यज्ञोपवीत दान करे सोलह सूप फल भरके देय। इस प्रकार की विधि करने से वन्ध्यापन से मनुष्य छूटता है तब उसको निश्चय इस कर्म के प्रयोग से सत् पुत्र का लाभ होता है।

तत्र धेनुमानमाह-सूर्यार्णवेऽपि हेमाद्रिवचनम्—

धेनुं निष्कचतुष्कस्य तदर्धं स्यात्तदर्धकम् । तदर्धस्य च वा तत्र चतुर्थांशेन वत्सकम्॥

चार निष्क की धेनु वा दो निष्क की अथवा एक निष्क की वा आधे निष्क की निर्माण करे, और उसके चतुर्थांश का बछवा बनाके दान देय, इसी प्रकार स्वर्ण का यज्ञोपवीत भी बनाकर दान देय, सामो धेनुं इस मन्त्र से होम करे इसकी विशेष विधि महार्णवादिक में है। प्रायश्चित करने के बाद दशविधि का स्नान करे, गोदानों को करे, फिर पञ्चगव्य का प्राशन करके उस दिन उपवास करे।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

पञ्चगव्यप्राशनमन्त्रः

यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके। प्राशनात् पञ्चगव्यस्य दहत्यग्निरिवेन्धनम् ॥

तब जिस अच्छे दिन में चन्द्रमा और तारा का विचार ठीक हो और उस दिन पुरुष संज्ञक नक्षत्र हो उस दिन सन्तानगोपाल का विधान करे।

जै अक्षर का मन्त्र हो उतना लक्ष जप करे वा जिस मन्त्र को ३ लक्ष लिखा है वह ३ लक्ष और जिसको एक लक्ष लिखा है उसको एक लक्ष जपकर हवनादि करके पुरश्चरण करे, और कलियुग के लिये तो

कलौ चतुर्गुणः प्रोक्तः पुरश्चरण के विधिः।

इस वचन के अनुसार चौगुना होना उचित है। मूल्य मन्त्र के जप करने के लिये आठ ब्राह्मण का वा चार ब्राह्मण का वरण करे, और सम्पूर्ण कर्म के अधिकारार्थ शान्त उस विधि के जानने वाले को आचार्य बनावे। पाँच प्रकार के वन्ध्यापन के दोष की शान्ति के लिये लक्ष संख्या पार्थिव लिङ्ग की पूजा करे। शतचण्डी पाठ, मन्युसूक्तजप, नवग्रह जप, रुद्राष्टाध्यायी जप, हरिवंश श्रवण करे। मन्त्रित जल से भरे हुए दश घड़ा जल से स्त्री के सहित यजमान नित्य स्नान करे।

जप होनेपर दशांश होम तर्पण ब्राह्मणभोजन दान तप करे। कुण्ड की पूजा करके फिर मण्डल देवता की पूजा करे यहाँ मुख्य योनिकुण्ड है। इस प्रकार मण्डप

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्रीलक्ष्मीधर - विद्यामन्दिर 3७२१



व्यवस्थापक- पं. चक्रधर जोशी

कुण्ड से निवृत्त होकर गणेश लोकपालादि वास्तुयोगिनी नवग्रहमातृका का स्थापन मूल देवता का स्थापन तोरण ध्वजा पताका का स्थापन करके उन २ देव के मन्त्र से उन स्थानों में पूजा करके कुण्ड का संस्कार कर अग्निस्थापन करे दशांश होमकर तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोजन नवग्रहादि मण्डल चतुष्टय देवता का यथाशक्ति सोने की प्रतिमा बनवावे और प्रधान देव की प्रतिमा आठ निष्क वा तीन निष्क सुवर्ण की बनवावे। अग्नि से तपाकर घृत में धर फिर स्थापित कर पूजा करे अन्त में आचार्य को देकर दक्षिणा देय।

## कृष्णविग्रहप्रकारः—

यदि शक्ति होय तो कृष्ण विग्रह करे। एकादश सुवर्णादि कलश 'महीद्यौ' मन्त्र से भूमि स्पर्श कर 'धान्यमसि, इस मन्त्र से कलश के नीचे अन्न धरे फिर उस अन्न पर कलशों को धरे फिर इसमें 'गंगे' इस मन्त्र से जल भरे 'पञ्चनद्यः' इससे तीर्थ का जल पंचरत्न पंचामृत पञ्चगव्य पञ्चपल्लव पञ्चत्वच सप्तमृत्तिका पूगी-फल द्रव्य जिस २ के छोड़ने का जो मन्त्र है उससे छोड़े फिर उसपर धान्य से पूर्णपात्र धरे वस्त्र फल धरे, उन सब कलशोपरि कमल का पुष्प धरे सबपर सोने की आठ २ निष्क की प्रतिमा धरे उन २ देवों के नाम से अलग २ प्राणप्रतिष्ठा करावे इष्ट देवों के साथ पुरुषसूक्त से आवाहनादि षोडषोपचार पूजा करे आवाहन में यह

श्री लक्ष्मीधर- देवप्रयाग (... व्यवस्थापक-पं.

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भी "आगच्छ देव भगवञ्छ्रीगोपाल नमोऽस्तु ते। मम सन्तानसिद्ध्यर्थं सान्निध्यं कुरु सर्वदा। मन्त्र पढ़े।

देवता के शयनार्थ आन्दोलक चामर छत्र आदर्श आदि भी धरे। घृत तेल पायस से होम करे पूर्णाहुति करके तर्पण मार्जन करे, कल्याणकारी वस्तुओं का सम्पादन करे, आचार्य ऋत्विज आदि को वस्त्र अलंकारों से सन्तोषित करके, आचार्य को मूर्ति दान कर जप करने वालों को दक्षिणा देकर अन्य दान के योग्य ब्राह्मणों को दक्षिणा देना योग्य है।

तिलसर्पिः भी पूजा में लिखा है।

देवतानां व्रतैर्युक्तं सन्तुष्टहृदयान्वितम्। वेदाध्ययनसंयुक्तं सपत्नीकं सपुत्रकम्॥
सुगन्धवस्त्रमाल्याद्यैः कुण्डलैरङ्गुलीयकैः। तस्मिन् सन्तानगोपालदानं भक्त्या समाचरेत्॥

दानमन्त्रः—

करुणाकर देवेश नवनीताशनप्रिय! देहि मे पुत्रसन्तानं कुलवृद्धिकरं मम॥

ऐसी प्रार्थना ब्राह्मण को देकर सुवर्ण दक्षिणा देय। आचार्य को द्विगुण गोमिथुन (गाय बैल) देकर सन्तोषित करे ब्राह्मणों को भोजन करावे आशीर्वाद ग्रहण कर यथासुख विहार करे। इस प्रकार करने से सन्तान होती है, भगवान् गोपालजी स्वयं अवतार लेंगे। इति सन्तानगोपालविधिः समाप्तः।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मन्त्रचान्द्रिका में जीवपुत्र वृक्ष की समिधा वा फल का हवन लिखा है, वह न मिलने पर तिल घी वा पायस से होम करना लिखा है।

यहाँ पार्थिवपूजा एकोत्तर वृद्धि लक्षका अलग २ है इसके अभाव में लक्षादि विधान के साथ एक तन्त्र से करे।

यथा लिङ्गार्चन विधान में—

एकोत्तरविधाने तु पृथक् पृथक् पूजनं च कार्यम्। लक्षलिङ्गप्रकारे तु सहैक-तन्त्रेण कारयेत्।

लिङ्गविधान में दशांश हवन का नियम नहीं है, किन्तु जितने लिङ्गों की पूजा करे उतनी आहुति देय।

तदुक्तं मन्त्रमहोदधौ लिङ्गार्चनदीपिकायां च—यत्संख्याकं यजेल्लिङ्गं तत्संख्यं होममाचरेत्।

—ॐ—

अथ पुत्रप्रदो नागेन्द्रयन्त्रः

भूर्जे कुंकुमगोरोचनादिना लेख्यम्। सचान्द्रबिन्दुयुतहकारगर्भे साधकनाम

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

लेख्यावेष्टय। ततोऽष्टदलेषु अनन्तादि अष्टनागाः स्वरैर्वेष्टनं रेखाभ्यां वृत्तम्, इति। यन्त्रस्य स्यात् हसोः जीव प्राणेदं समनुद्वयम्। मध्ये बीजादधोजीवं विदिक्षु प्राणवर्णकान्। नेत्रे श्रोत्रे न्यसेद् पार्श्वे नेत्रे इं ईं उं ऊं श्रुती। यन्त्रराजाय विद्महे वरप्रदाय धीमहि। तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्॥ इति यन्त्रगायत्री।

भोजपत्र पर कुंकुम गोरोचन से नागेन्द्र यन्त्र को लिखे, मध्य में चन्द्रबिन्दु के सहित हकार को लिखे साधक के नाम से वेष्टित करे फिर अदल में अनन्तादि आठ नागों को लिखे, स्वरों से वेष्टित करे फिर दो वृत्त ( गोलाकार ) बनावे यन्त्र का हसोः जीव प्राणये देह दो है। मध्य में बीज नीचे जीव बिदिशाओं में प्राणवर्ण को जाने नेत्रों में इं ईं कान में उँ ऊँ है।

आवाहनादिषोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत्। ॐ यंत्रराज नमस्तेऽस्तु रक्ष मां देहि मे सुतान्। हं बीजेनाष्टभिर्नानागैः षोडशस्वरशक्तिभिः॥ श्रियमायुश्च सौभाग्यमारोग्यं सन्तति ध्रुवाम्। बीजशक्ति च नागाँश्च स्वरान् सम्पूज्य धारयेत्॥ प्रणमेत् प्रत्यहं यन्त्रं प्रार्थयेद्भक्तितः सुधीः आश्लेषायां च पञ्चम्यां विशेषेणार्चयेन्नमेत्॥ नागेन्द्रयन्त्रमुद्दिश्य ब्रह्मचारींश्च भोजयेत्। दुष्टग्रहसुतस्थाने तस्य दोषप्रशान्तये॥ तस्य नागभयं न स्यात् तत्कुलं रक्षयन्ति हि। नागयन्त्रमिदं धार्यं सम्पद्सन्ततिवर्धनम्॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अथाष्टनागाः

अनन्तः शङ्खपालो मां तक्षकः पुण्डरीककः। पद्मः कर्कोटको वासुकोनागः कुलिकोऽवतु ॥ इति ॥

नागेन्द्र यन्त्र का आवाहनादि षोडशोपचार पूजन करके "ॐ" यंत्रराज नमस्तेऽस्तु इत्यादि मन्त्र से इस यन्त्र को नित्य प्रणाम करे और प्रार्थना करे श्रेष्ठ नक्षत्र और पञ्चमी तिथियों में विशेष पूजा कर नमस्कार कर प्रार्थना करे, इस नागेन्द्र यन्त्र के निमित्त पुत्रस्थान में दुष्टग्रह के दोषों के शान्तार्थ ब्रह्मचारियों को भोजन करावे। उसको सर्प का भय नहीं होता है धन-पुत्र की वृद्धि होती है।

अष्टनागों के नाम प्रार्थना—१ अनन्त, २ शंखपाल, ३ तक्षक, ४ पुण्डरीक, ५ पद्म, ६ कर्कोटक, ७ वासुकी, ८ कुलिक ये मेरी रक्षा करें।

इति श्री मातृप्रसादपाण्डेयसंकलितसन्तानगोपालमन्त्रविधिः सम्पूर्णः।

पता—भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस।

ब्रांच—कचौड़ी गली, बनारस।

मुद्रक—ह० मा० सप्रे, श्रीलक्ष्मीनारायण प्रेस, जतनबर, बनारस।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ इति ॥

# सन्तानगोपालस्तोत्रम्

## सन्तानोत्पत्तिविधानसहितम्

पता—भार्गव पुस्तकालय, गायघाट, बनारस
ब्रांच—कचौड़ी गली, बनारस ।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

# तुलसीविवाहपद्धतिः

लेखक—व्याकरणाचार्य 'विद्यारत्न' पं० माधवप्रसाद व्यास ।
सम्मति लेखक–काशी के प्रसिद्ध विद्वान् महामहोपाध्याय श्री पं० विद्याधरजी गौड़
( प्रिन्सिपल हिन्दू यूनिवर्सिटी, काशी ) ।

तुलसी-माहात्म्य, पूजा-व्रतविधान, लक्षप्रदक्षिणा, उद्यापन, नाम, गुण, प्रणाममन्त्र स्पर्शमन्त्र, स्थानमार्जनमन्त्र, ग्रहणमन्त्र, विष्णपूजा तथा विष्णुसहस्रनामसहिता ।

आज तक तुलसीविवाहपद्धति कहीं भी नहीं छपी है। वैष्णवों को तथा स्त्रियों को इसकी जरूरत बराबर रहा करती है । जरूरत पड़ने पर पुरोहितवर्ग बड़े २ पण्डितों के यहाँ पद्धति समझने के लिये दौड़ मारा करते हैं । इस कठिनाई को दूर करने के लिये पद्धति का बनाना आवश्यक हो गया। अतः यह पद्धति बड़े परिश्रम के साथ तैयार की गई है । इसके साथ और भी बहुत से विषय दे दिये गये हैं जिनकी प्रतिदिन जरूरत पड़ा करती है । जिनमें तुलसी-माहात्म्य, पूजनविधान, व्रतविधान, लक्षप्रदक्षिणा, उद्यापन, नाम,गुण, प्रणाममन्त्र, स्पर्शमन्त्र, स्थानमार्जनमन्त्र, ग्रहणमन्त्र, विष्णुपूजन-बिधान और तुलसी चढ़ाने के लिये विष्णुसहस्रनामावलि तथा तुलसी आरती, विष्णु आरती आदि विषय हैं । विशेष परिचय पुस्तक देखने से होगा । मूल्य १॥)

प्रकाशक–भार्गवपुस्तकालय, गायघाट, बनारस [ ब्रांच–कचौड़ागली, बनारस । ]

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri